# Class XI Session 2025-26
# Subject - Hindi Core
# Sample Question Paper - 3

**निर्धारित समय: 3 घंटे** **अधिकतम अंक: 80**

**सामान्य निर्देश:**

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए :-

- यह प्रश्न-पत्र तीन खण्डों में विभाजित है।
- खंड - क में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- खंड - ख में पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- खंड - ग में पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

## खंड क (अपठित बोध)

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (10)** **[10]**

भारतीय शास्त्रीय संगीत की यह एक विलक्षणता है कि एक राग जितनी बार प्रस्तुत होता है- उतनी बार नयापन उभरता है, इसका आकर्षण कभी नहीं चूकता। इसकी समकालीन गुणवत्ता सालों के फ़ासले में नहीं बदलती, यह समय के छोटे-छोटे हिस्से में भी घटित होती है। इसके बावजूद इसमें ऐसा भी तत्त्व है जो कभी नहीं बदलता। वह समय की गति को लाँघ जाता है, शाश्वतता और समकालीनता की यही संधि भारतीय कला विधाओं की निजी पहचान है। भारतीय शास्त्रीय संगीत का आधार तत्त्व लोकगीतों में निहित है। लोकगीतों की धुनों को शास्त्रीय संस्कार देकर अनेक राग बनाए गए हैं। भटियारी, पूरबी, जौनपुरी, सोरठा और मुलतानी जैसे अनेक राग बंगाल, बिहार, पंजाब और सौराष्ट्र के अंचलों में गाए जाने वाले लोकगीतों की धुनों से निर्मित हुए हैं। इतना ही नहीं, प्रकृति में व्याप्त स्वरों से भी रागों की निर्मितियाँ हुई हैं। कई समर्थ गायकों ने आंचलिक गीतों को शास्त्रीय पद्धति में ढालकर विशिष्ट गायकी द्वारा ख्याति अर्जित की है। लोकगीतों का सीधा संबंध प्रकृति से है। प्रकृति में अपना छंद है, लय है। स्वरों की संस्कार-प्रक्रिया तब तक पूरी नहीं होती जब तक प्रकृति के छंदों की अनुभूति से मिली समाहारकारी दृष्टि से राग की प्रकृति और उसे प्रसूत करने वाली प्रकृति के बीच का अंतर्संबंध तय नहीं कर लिया जाता।

संगीत में जिस बिंदु पर लय और ताल एक-दूसरे से मिलते हैं उसे सम कहते हैं। लय है प्रकृति की विभिन्नता - सामयिकता और ताल है एकत्व - शाश्वतता। इन दोनों के मिलन से संस्कृति बनती है। संस्कृति न तो प्रकृति की यथास्थिति की स्वीकृति है, न विद्रोह। यह विभिन्नता में संस्कार द्वारा याचित एकत्व का नाम है। "प्राकृतिक शक्तियों का मनमाना संयोजन विकृति है और सामाजिक मंगल की दृष्टि से उनका संयोजन संस्कृति है।"

**(i) भारतीय शास्त्रीय संगीत का आधार तत्त्व क्या है? (1)**

क) विदेशी संगीत

ख) लोकगीत

ग) आधुनिक धुनें

घ) पश्चिमी संगीत

**(ii) भारतीय शास्त्रीय संगीत में नयापन कब उभरता है? (1)**

क) हर नए साल में

ख) हर नए गायक के साथ

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

ग) हर बार प्रस्तुत होने पर

घ) हर नई धुन के साथ

**(iii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए - (1)**

कथन (I): भारतीय शास्त्रीय संगीत में शाश्वतता और समकालीनता का अद्भुत मिलन होता है।

कथन (II): भारतीय शास्त्रीय संगीत का आधार पूरी तरह से पश्चिमी शैलियों पर आधारित है।

कथन (III): रागों का निर्माण केवल प्रकृति से प्रेरित धुनों से ही हुआ है।

कथन (IV): लोकगीतों का सीधा संबंध प्रकृति से है और वे शास्त्रीय संगीत की धरोहर बन गए हैं।

**गद्यांश के अनुसार कौन-सा/से कथन सही हैं?**

क) केवल कथन (I) और (IV) सही हैं।

ख) केवल कथन (II), (III) और (IV) सही हैं।

ग) केवल कथन (I), (II) और (III) सही हैं।

घ) केवल कथन (I), (III) और (IV) सही हैं।

(iv) रागों की निर्मितियाँ किससे भी हुई हैं? (1)

(v) भारतीय शास्त्रीय संगीत की समकालीन गुणवत्ता कैसे बनी रहती है? (2)

(vi) लोकगीतों का संबंध किससे है और क्यों? (2)

(vii) संस्कृति का स्वरूप क्या है और यह कैसे बनती है? (2)

2. **निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (8)** **[8]**

जिनकी भुजाओं की शिराएँ फड़की ही नहीं,
जिनके लहू में नहीं वेग है अनल का
शिव का पादोदक है पेय जिनका रहा,
चखा ही जिन्होंने नहीं स्वाद हलाहल का
जिनके हृदय में कभी आग सुलगी ही नहीं
ठेस लगते ही अहंकार नहीं छलका।
जिनको सहारा नहीं भुज के प्रताप का है,
बैठते भरोसा किए वे ही आत्मबल का।
उसकी क्षमा, सहिष्णुता का है महत्त्व ही क्या
करना ही आता नहीं जिनको प्रहार है?
करुणा, क्षमा को छोड़ और क्या उपाय उसे
ले न सकता जो बैरियों से प्रतिकार है?
सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है;
करुणा, क्षमा हैं क्लीव जाति के कलंक घोर,
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का सिंगार है।।

i. **निम्नलिखित काव्यांश के अनुसार, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और सही विकल्प का चयन करें: (1)**

कथन I: शूरवीरों की क्षमा और सहिष्णुता उनके साहस का प्रतीक है।

कथन II: जो प्रतिकार करने में असमर्थ है, उसकी क्षमा और करुणा का कोई महत्त्व नहीं।

कथन III: क्षमा और करुणा केवल निर्बल और क्लीव जाति के लक्षण हैं।

कथन IV: पौरुष और प्रताप के बिना आत्मबल संभव नहीं है।

**विकल्प:**

क) कथन I और II सही हैं।

ख) कथन II और III सही हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

ग) कथन I, II और IV सही हैं।

घ) कथन I, II, III और IV सही हैं।

ii. **कविता के अनुसार, 'करुणा, क्षमा को छोड़ और क्या उपाय उसे' से कवि क्या कह रहे हैं? (1)**

क) करुणा और क्षमा की महत्वता

ख) प्रतिकार के बिना समाधान

ग) शौर्य और शक्ति के बिना जीवन

घ) शांति और संतुलन की खोज

iii. **नीचे दिए गए कॉलम 1 को कॉलम 2 से सुमेलित करें और सही विकल्प का चयन करें: (1)**

| कॉलम 1 | कॉलम 2 |
|---|---|
| I. साहस और पौरुष | 1. शूरवीरों का सिंगार। |
| II. क्षमा और करुणा | 2. क्लीव जाति का कलंक। |
| III. आत्मबल | 3. भुज के प्रताप पर आधारित। |

क) I - (2), II - (3), III - (1)

ख) I - (1), II - (2), III - (3)

ग) I - (1), II - (3), III - (2)

घ) I - (3), II - (2), III - (1)

iv. **कविता में 'शिव का पादोदक' से क्या संकेत मिलता है? (1)**

v. **कविता के अनुसार, क्यों करुणा और क्षमा को 'क्लीव जाति के कलंक' के रूप में देखा गया है? (2)**

vi. **कविता के अनुसार, 'सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव' का क्या तात्पर्य है? (2)**

**खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर )**

3. **दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।** **[6]**

   i. **प्राकृतिक सुंदरता का वातावरण** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए। **[6]**

   ii. **परिश्रम से जी चुराना** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए। **[6]**

   iii. **भारतीय समाज में नारी** विषय पर अनुच्छेद लिखिए। **[6]**

4. आपके गाँव को बिजली की पर्याप्त आपूर्ति न होने से ट्यूब वेल नहीं चलते और सिंचाई नहीं हो पाती। इसके संभावित परिणामों का उल्लेख करते हुए अपने ज़िलाधीश को पत्र लिखिए। **[5]**

अथवा

आप अपने विद्यालय से आर्थिक सहायता पाना चाहते हैं। अपनी आर्थिक स्थिति को स्पष्ट करते हुए अपने विद्यालय के प्राचार्य को आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए।

5. **अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[11]**

   i. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिये: (2 X 4 = 8)**

      i. खोजपरक पत्रकारिता के विषय में बताइए। **[2]**

      ii. स्ववृत्त में व्यक्तित्व का स्रोत क्या होता है? **[2]**

      iii. पारिभाषिक शब्द किसे कहते हैं? पारिभाषिक शब्द कोष का विश्लेषण कीजिए। **[2]**

      iv. संचार किसे कहते हैं? **[2]**

      v. आप डीएवी विद्यालय में पढ़ते हैं। विद्यालय में वार्षिक खेल महोत्सव होने जा रहा है उसकी पाँचवी बैठक के लिए एक कार्यसूची तैयार कीजिए। **[2]**

   ii. i. पटकथा की मूल इकाई क्या और कैसे है? **[3]**

**अथवा**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

i. डायरी का क्या उपयोग है? **[3]**

**खंड- ग (आरोह भाग - 1 एवं वितान भाग-1 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)**

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

और माँ बिन-पढ़ी मेरी,
दु:ख में वह गढ़ी मेरी
माँ कि जिसकी गोद में सिर,
रख लिया तो दुख नहीं फिर,
माँ कि जिसकी स्नेह-धारा,
का यहाँ तक भी पसारा,
उसे लिखना नहीं आता,
जो कि उसका पत्र पाता।
पिता जी जिनको बुढ़ापा,
एक क्षण भी नहीं व्यापा,
जो अभी भी दौड़ जाएँ
जो अभी भी खिलखिलाएँ,
मौत के आगे न हिचकें,
शर के आगे न बिचकें,
बोल में बादल गरजता,
काम में झझ लरजता,

i. काव्यांश में अपने बच्चों के प्रति माँ की कौनसी स्वभावगत विशेषता प्रकट हुई है?

क) निरक्षर होना ख) बुढ़ापा आना
ग) बच्चों से बहुत स्नेह करना घ) दुखों से रचना

ii. उपरोक्त काव्यांश कवि ने कब लिखा?

क) अपने परदेश प्रवास के दौरान ख) अपने छात्रावास प्रवास के दौरान
ग) अपने शहर प्रवास के दौरान घ) अपने जेल प्रवास के दौरान

iii. कवि के पिता पर बुढ़ापे का कोई प्रभाव नहीं है- आशय स्पष्ट करने वाली पंक्ति है-

क) पिताजी जिनको बुढ़ापा एक क्षण भी नहीं व्यापा ख) जो अभी भी खिलखिलाए
ग) शेर के आगे न बिचके घ) जो अभी भी दौड़ जाए

iv. कवि की माँ अपने बेटे को पत्र क्यों नहीं लिख पाती?

क) क्योंकि वह पत्र लिखना नहीं चाहती ख) क्योंकि वह निरक्षर है
ग) क्योंकि कवि पत्र पढ़ना नहीं चाहता घ) क्योंकि उसे जेल का पता नहीं पता

v. जेल में बंद कवि को घर की याद कब आती है?

क) काम करने पर ख) दुखी होने पर
ग) कविता लिखने पर घ) सावन की बरसात में

7. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (3 X 2 = 6 अंक)** **[6]**

i. **जैसे बाढ़ी काष्ट ही काटै अगिनि न काटै कोई।** **[3]**
**सब घटि अंतरि तूँही व्यापक धरै सरूपै सोई।।**
इसके आधार पर बताइए कि कबीर की दृष्टि में ईश्वर का क्या स्वरूप है?

ii. चंपा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती कविता में गाँधी जी का प्रसंग किस संदर्भ में आया तथा क्यों? **[3]**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

iii. आओ, मिलकर बचाएँ कविता में संथाल बस्तियों की किन विशेषताओं का ज्ञान आपको कविता के माध्यम से हुआ? **[3]**

8. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (2 X 2 = 4 अंक)** **[4]**

i. सबसे खतरनाक कविता में मुट्ठियाँ भींचकर वक्त निकालने को बुरा क्यों कहा गया है? **[2]**

ii. मेरे तो गिरधर गोपाल- पद का भाव स्पष्ट करें। **[2]**

iii. अक्क महादेवी ईश्वर से भीख मँगवाने की प्रार्थना क्यों करती है? **[2]**

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

अलोपीदीन ने कलमदान से कलम निकाली और उसे वंशीधर के हाथों में देकर बोले-न मुझे विद्वता की चाह है, न अनुभव की, न मर्मज्ञता की, न कार्य कुशलता की। इन गुणों के महत्त्व का परिचय खूब पा चुका हूँ। अब सौभाग्य और सुअवसर ने मुझे वह मोती दे दिया है जिसके सामने योग्यता और विद्वता की चमक फीकी पड़ जाती है। यह कलम लीजिए, अधिक सोच विचार न कीजिए, दस्तखत कर दीजिए। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह आपको सदैव वही नदी के किनारे वाला बेमुरौवत, उद्दंड, कठोर परंतु धर्मनिष्ठ दारोगा बनाए रखे।

i. अलोपीदीन वंशीधर से क्या चाहते थे?

क) उनकी अनुमति ख) मुआवजा

ग) स्टांप पत्र पर दस्तखत घ) धन

ii. अलोपीदीन को किन गुणों का परिचय खूब मिल चुका था?

क) सभी ख) विद्वता

ग) अनुभव घ) कार्यकुशलता

iii. वंशीधर कैसे दारोगा थे?

क) बेईमान ख) कठोर

ग) धर्मनिष्ठ घ) रिश्वतखोर

iv. अलोपीदीन वंशीधर की किस विशेषता से प्रभावित थे?

क) ईमानदारी से ख) धर्मनिष्ठता से

ग) कर्तव्यपरायणता से घ) सभी

v. गद्यांश के आधार पर अलोपीदीन की चारित्रिक विशेषता चुनिए-

क) चालाक ख) मददगार

ग) गुणों के पारखी घ) कुशल व्यापारी

10. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (3 X 2 = 6 अंक)** **[6]**

i. **अपू के साथ ढाई साल** पाठ में बारिश का दृश्य चित्रित करने में क्या मुश्किल आई और उसका समाधान किस प्रकार हुआ? **[3]**

ii. नेहरू जी भारत के सभी किसानों से कौन-सा प्रश्न बार-बार करते थे? **[3]**

iii. रजनी पाठ में स्त्री के चरित्र की बनी बनाई धारणा से रजनी का चेहरा किन मायनों में अलग है? **[3]**

11. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (2 X 2 = 4 अंक)** **[4]**

i. बादशाह के नाम का प्रसंग आते ही लेखिका की बातों में मियाँ नसीरुद्दीन की दिलचस्पी क्यों खत्म होने लगी? **[2]**

ii. विदाई-संभाषण पाठ में **आपके और यहाँ के निवासियों के बीच में कोई तीसरी शक्ति और भी है**- यहाँ **तीसरी शक्ति** किसे कहा गया है? **[2]**

iii. गलता लोहा शीर्षक की सार्थकता पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। **[2]**

12. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (5 X 2 = 10 अंक)** **[10]**

i. भारतीय गायिकाओं में बेजोड़: लता मंगेशकर-प्रस्तुत पाठ में गाने के लिए किन तत्वों को आवश्यक माना गया है? **[5]**

ii. राजस्थान में रजत बूँदें पाठ में चेलवांजी तथा उसके द्वारा किए जानेवाले कार्य का संक्षिप्त परिचय दीजिए। **[5]**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

iii. **आलो-आँधारि** पाठ में तातुश ने बेबी को क्या दिया? उस पर बेबी की क्या प्रतिक्रिया थी? **[5]**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

# Solution

## खंड क (अपठित बोध)

1. (i) ख) लोकगीत
   (ii) ग) हर बार प्रस्तुत होने पर
   (iii) क) केवल कथन (I) और (IV) सही हैं।
   (iv) रागों की निर्मितियाँ प्रकृति में व्याप्त स्वरों से भी हुई हैं।
   (v) भारतीय शास्त्रीय संगीत की समकालीन गुणवत्ता सालों के फ़ासले में नहीं बदलती और समय के छोटे-छोटे हिस्सों में भी घटित होती है।
   (vi) लोकगीतों का संबंध प्रकृति से है क्योंकि प्रकृति में अपना छंद और लय है, जो लोकगीतों में भी झलकता है।
   (vii) संस्कृति का स्वरूप प्राकृतिक शक्तियों के सामाजिक मंगल की दृष्टि से संयोजन से बनता है, न कि मनमाने संयोजन से विकृति से। यह विभिन्नता में संस्कार द्वारा याचित एकत्व का नाम है।

2. i. घ) कथन I, II, III और IV सही हैं।
   ii. ख) प्रतिकार के बिना समाधान
   iii. ख) I - (1), II - (2), III - (3)
   iv. 'शिव का पादोदक' से संकेत मिलता है कि कवि उन लोगों की बात कर रहे हैं जिनका आदर्श और जीवन शिव की तपस्या और आत्म-संयम के सिद्धांतों पर आधारित है।
   v. कविता के अनुसार, करुणा और क्षमा को 'क्लीव जाति के कलंक' के रूप में देखा गया है क्योंकि ये गुण वीरता और शक्ति के अभाव के प्रतीक माने जाते हैं। कवि का मानना है कि करुणा और क्षमा शूरवीरों की पहचान नहीं होतीं और ये गुण बल और प्रतिकार की कमी का संकेत देते हैं।
   vi. 'सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव' का तात्पर्य है कि केवल वही व्यक्ति प्रहार सह सकता है जिसकी नसों में वीरता और शक्ति का प्रवाह नहीं होता। यह किसी कमजोरी या विवशता का संकेत है।

## खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर )

3. दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।

(i) **'प्राकृतिक सुंदरता का वातारण'**

प्रकृति से हमारी मित्रता अनंतकाल से चलती आ रही है। हम जिस प्राकृतिक परिवेश में रहते हैं, वह अद्भुत सौंदर्य से भरा पड़ा है। प्रकृति से ही हमें पीने को पानी, शुद्ध-हवा, जीव-जंतु, पेड़-पौधे, भोजन, रहने को घर आदि मिलता है, जिससे मनुष्य एक बेहतर और अच्छा जीवन व्यतीत कर पाता है। वाकई, प्रकृति में वह शक्ति निहित होती है, जो शरीर से कई बीमारियों को दूर कर देती है। आस-पास की हरियाली से मन का तनाव कम होता है और दिमाग़ को शांति मिलती है। वास्तव में देखा जाए तो प्रकृति और मनुष्य दोनों हमेशा से एक-दूसरे के पूरक रहे हैं। प्रकृति जितनी सुंदर होगी, उतने ही हमारे जीवन में सुखदायक पल होंगे।

वर्तमान में प्रकृति का जिस प्रकार से दोहन हो रहा है, वह एक चिंता का विषय है। जैसे पेड़ों की अंधाधुंध कटाई, रासायनिक खाद का उपयोग, कीटनाशक दवाईयों का बड़े पैमाने पर छिड़काव, कारखानों से उत्सर्जित कचरों के प्रबंधन में लापरवाही इत्यादि। अतः हमें अपने प्राकृतिक वातावरण को हरा-भरा रखने का प्रयास करना चाहिए। ज्यादा से ज्यादा पौधरोपण करना चाहिए। जब हमारी पृथ्वी की सतह पेड़ पौधों से हरी-भरी रहेगी तो हमारी वायु भी स्वच्छ रहेगी तथा लोगों के लिए शुद्ध हवा उपलब्ध हो सकेगी। पेड़ पौधे कार्बन-डाई-ऑक्साइड का उपभोग कर हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। निःसंदेह, इसी प्राणवायु पर हमारा जीवन टिका है। इसलिए प्राकृतिक सुंदरता का वातावरण निर्मित होना अत्यंत आवश्यक है।

(ii) **'परिश्रम से जी चुराना'**

कहते हैं **'कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती'**। बेशक, परिश्रम मानव जीवन का वह हथियार है, जिसके बलबूते कठिन से कठिन चुनौतियों पर विजय हासिल की जा सकती है। जहाँ, परिश्रम से जी चुराने वाला व्यक्ति अपने जीवन में कभी सफल नहीं हो पाता। वह आलसी बन जाता है। उसमें कार्य के प्रति उमंग, उत्साह और जोश नहीं रहता। वहीं, एक परिश्रमी व्यक्ति सदैव सफलता का स्वाद चखता है। परिश्रमी व्यक्ति में आत्मविश्वास, लगन और दृढ़ इच्छाशक्ति का विकास होता है। परिश्रम से ही हमारी सामाजिक और आर्थिक प्रगति तय हो पाती है।

युगों-युगों से परिश्रमी व्यक्तियों ने ही मानव जाति के उत्थान में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। वैज्ञानिक उन्नति में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। आज अपने कठिन परिश्रम के बलबूते ही मनुष्य अंतरिक्ष में भी पाँव पसार चुका है। परिश्रम न केवल हमारे व्यक्तिगत विकास में योगदान देता है, बल्कि समाज और राष्ट्र के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने में सहायक सिद्ध होता है।

अतः हम कह सकते हैं कि परिश्रम ही सफलता का आधार है। कड़ी मेहनत के बिना जीवन हम मनुष्यों को कुछ भी नहीं देता। जो जैसा कर्म करता है, उसे फल की प्राप्ति भी उसी अनुरूप होती है।

(iii) **भारतीय समाज में नारी**

भारतीय समाज में नारी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण और बहुआयामी है। नारी को देवी, शक्ति, और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है, लेकिन इसके बावजूद उन्हें समाज में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

प्राचीन काल में नारी को उच्च सम्मान प्राप्त था। वैदिक काल में महिलाएँ शिक्षा प्राप्त करती थीं और धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेती थीं। गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषियों का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में मिलता है।

मध्ययुगीन काल में नारी की स्थिति में गिरावट आई। इस समय सती प्रथा, बाल विवाह, और पर्दा प्रथा जैसी कुरीतियाँ प्रचलित हो गईं। महिलाओं

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

को घर की चारदीवारी में सीमित कर दिया गया।
आधुनिक काल में नारी ने अनेक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं। स्वतंत्रता संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई, सरोजिनी नायडू, और कस्तूरबा गांधी जैसी महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, भारतीय संविधान ने महिलाओं को समान अधिकार प्रदान किए।
आज की नारी शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, राजनीति, और खेल जैसे विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बना रही है। इंदिरा गांधी, कल्पना चावला, पी.टी. उषा, और मैरी कॉम जैसी महिलाओं ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत का नाम रोशन किया है।
हालांकि, समाज में अभी भी महिलाओं को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। दहेज प्रथा, घरेलू हिंसा, और लैंगिक भेदभाव जैसी समस्याएँ आज भी विद्यमान हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए सरकार और समाज को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है।
भारतीय समाज में नारी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वह एक माँ, पत्नी, बेटी, और बहन के रूप में परिवार की धुरी है। समाज के विकास और प्रगति में नारी की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। नारी के बिना समाज की कल्पना अधूरी है।

4. परीक्षा भवन,
भरतपुर
दिनांक: 12/12/20XX
सेवा में,
विद्युत अभियंता,
बिजली बोर्ड, भरतपुर।
विषय: पलवल गाँव में अनियमित विद्युत आपूर्ति के सम्बन्ध में।
महोदय,
मैं पलवल गाँव का निवासी हूँ। इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान हमारे गाँव में होने वाली अनियमित विद्युत आपूर्ति की ओर खींचना चाहता हूँ। पिछले माह भी हमने आपको पत्र लिखकर इस समस्या के समाधान हेतु निवेदन किया था, पर आपकी ओर से समस्या का कोई निदान नहीं हुआ। बिजली की पर्याप्त आपूर्ति न होने से ट्यूबवेल नहीं चलते, जिसका प्रभाव सिंचाई व्यवस्था पर पड़ता है। आप ही बताइए कि यदि सिंचाई नहीं पाएगी तो फसल किस प्रकार बढ़ेगी। इस प्रकार बिजली के इस आँख-मिचौनी के खेल के कारण हम लोग त्रस्त हैं। यदि ऐसा ही चलता रहा तो हम कृषि व्यवस्था को किस प्रकार सुचारू रूप से चलाएँ।
अतः श्रीमान् से अनुरोध है कि हमारे गाँव की विद्युत-व्यवस्था में सुधार लाने की कृपा की जाए।
भवदीय
क.ख.ग.

अथवा

पता-
दिनांक-
सेवा में,
श्रीमान प्रधानाध्यापक महोदय,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भरतपुर
विषय-विद्यालय शुल्क माफ करने हेतु आवेदन।
महोदय,
सविनय निवेदन यह है कि आपके विद्यालय की दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। मैं आपके विद्यालय में कक्षा सात से पढ़ता आ रहा हूँ तथा हर वर्ष विद्यालय में सबसे अधिक अंक प्राप्त करता रहा हूँ।
इन दिनों मेरे घर की आर्थिक स्थिति सही नहीं चल रही है क्योंकि मेरे पिताजी पिछले चार महीने से बीमार हैं। घर चलाने वाले वे एकमात्र सदस्य हैं, वे फेरी लगाते हैं। एक तो उनकी आय बहुत कम है और बीमारी के कारण घर पर अतिरिक्त बोझ आ पड़ा है। मैं पढ़ाई को जारी रखना चाहता हूँ पर घर की बिगड़ती स्थिति के कारण यह संभव प्रतीत नहीं हो रहा है।
अतः आपसे विनम्र अनुरोध है कि विद्यालय निर्धन कोष में से मुझे कुछ आर्थिक सहायता प्रदान करें और मेरा शुल्क माफ़ करें। आपकी इस कृपा के लिए मैं सदा आपका आभारी रहूँगा।
आपका आज्ञाकारी छात्र
क. ख. ग.

5. अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:
(i) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिये: (2 X 4 = 8)
i. वह पत्रकारिता जो गहराई से छानबीन करके ऐसे तथ्यों और सूचनाओं को सामने लाने की कोशिश करती है, जिन्हें दबाने या छुपाने का प्रयास किया जा रहा हो, खोजपरक पत्रकारिता कहलाती है। इसका नवीनतम रूप 'स्टिंग ऑपरेशन' है।
ii. स्ववृत्त में व्यक्तित्व का स्रोत कार्येत्तर योग्यता होती है इसमें अपने कार्य के अतिरिक्त अन्य गतिविधियाँ, रूचियाँ आदि होती हैं। कार्येत्तर गतिविधियों के माध्यम से नियोक्ता को उम्मीदवार की आवेदित पद के अनुसार योग्यता का निर्णय करने में आसानी हो जाती है।
iii. विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को पारिभाषिक शब्द कहते हैं। किसी भाषा के पारिभाषिक शब्दों का सीधा सम्बन्ध उस भाषा के सांस्कृतिक एवं वैचारिक विकास से होता है। शास्त्रों और विज्ञान शाखाओं के पारिभाषिक शब्दकोषों की रचना एक भाषा में भी होती है और दो या अनेक भाषाओं में भी। कुछ में केवल पयार्य शब्द रहते हैं और कुछ में व्याख्याएँ अथवा परिभाषाएँ भी दी जाती हैं। विज्ञान और तकनीकी या प्राविधिक विषयों से सम्बन्ध नाना पारिभाषिक शब्द कोषों में व्याख्यात्मक परिभाषाओं तथा कभी-कभी अन्य साधनों की

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

सहायता से भी बिल्कुल सही अर्थ का बोध कराया जाता है। प्राचीन शास्त्रों और दर्शनों आदि के विशिष्ट एवं पारिभाषिक शब्दों के कोष भी बनाए गए हैं।

iv. 'संचार' शब्द की उत्पत्ति 'चर' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है-चलना या एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचना।
सूचनाओं, विचारों और भावनाओं को लिखित, मौखिक या दृश्य-श्रव्य माध्यमों के जरिए सफलतापूर्वक एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाना ही संचार है।

v.

**कार्यसूची**

डी.ए.वी. स्कूल के वार्षिक खेल महोत्सव हेतु पाँचवी बैठक की कार्यसूची

23 सितम्बर, 2020

1. चौथी बैठक के कार्यवृत्त की संपुष्टि
2. पिछली बैठकों के लिए किए गर निर्णयों के अनुपालन की समीक्षा
3. महोत्सव में अधिक छात्रों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहन करने पर चर्चा
4. खेल महोत्सव की गुणवत्ता बढ़ाने पर चर्चा
5. महोत्सव के इस्तेमाल में आने वाली धन राशि को बढ़ाने पर चर्चा
6. प्रधानाचार्य की अनुमति से किसी भी अन्य विषय पर विमर्श

श्री राधेश्याम मिश्र
(श्री राधेश्याम मिश्र)
प्रधानाचार्य

निम्नलिखित सदस्य कार्यसूची के अवलोकन उपरान्त हस्ताक्षर करें-

| क्र. सं. | सदस्य का नाम | पदनाम | हस्ताक्षर |
|---|---|---|---|
| 1 | श्री त्रिभुवन शर्मा | स्कूल निदेशक | |
| 2 | श्रीमती जानकी वर्मा | उप प्रधानाचार्य | |
| 3 | श्री रामविलास | हिंदी अध्यापक | |

(ii) i. पटकथा की मूल इकाई दृश्य होता है। एक दृश्य का निर्माण एक स्थान पर एक ही समय में लगातार चल रहे कार्य व्यापार के आधार पर होता है। यदि इन में से किसी एक में भी कोई परिवर्तन होता है तो सारा दृश्य ही बदल जाता है। उदाहरण के लिए पाठ्यपुस्तक 'आरोह' के 'रजनी' पाठ में दृश्य एक लीला बेन के फ़्लैट का है। समय दोपहर का। उनका बेटा अमित स्कूल से वापस आने वाला है। दूसरा दृश्य अगले दिन का है। समय दिन का। स्थान अमित के स्कूल के हेडमास्टर का कमरा है। तीसरा दृश्य उसी दिन का है। समय शाम का। स्थान रजनी का फ़्लैट है। इस प्रकार ये तीनों दृश्यअलग-अलग स्थान के हैं इसलिए बदल गए हैं।

**अथवा**

i. डायरी के प्रत्येक पृष्ठ पर एक तिथि होती है तथा शेष पृष्ठ खाली होता है। इस खाली पृष्ठ का उपयोग उस तिथि विशेष से संबंधित सूचनाओं अथवा अपनी निजी बातों को लिखने के लिए किया जाता है। किसी विशेष तिथि पर यदि हमें कोई विशेष कार्य करना है अथवा कहीं जाना है तो उससे संबंधित सूचना पहले से ही उस तिथि वाले पृष्ठ पर लिख दी जाती है। इससे उक्त तिथि के आने पर हमें किए जाने वाले कार्य याद आ जाते हैं।
हमारे दिन प्रतिदिन के अनुभवों को भी हम उस तिथि के पृष्ठ पर लिख कर अपने अनुभवों को सुरक्षित रख सकते हैं। कुछ लोग अपने दैनिक आय-व्यय का विवरण, धोबी-दूध का हिसाब, बच्चों की शरारतों आदि को भी डायरी में लिखते हैं।

**खंड- ग (आरोह भाग - 1 एवं वितान भाग-1 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)**

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

और माँ बिन-पढ़ी मेरी,
दु:ख में वह गढ़ी मेरी
माँ कि जिसकी गोद में सिर,
रख लिया तो दुख नहीं फिर,
माँ कि जिसकी स्नेह-धारा,
का यहाँ तक भी पसारा,
उसे लिखना नहीं आता,
जो कि उसका पत्र पाता।
पिता जी जिनको बुढ़ापा,
एक क्षण भी नहीं व्यापा,
जो अभी भी दौड़ जाएँ
जो अभी भी खिलखिलाएँ,
मौत के आगे न हिचकें,
शर के आगे न बिचकें,

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

बोल में बादल गरजता,
काम में झझ लरजता,

(i) **(ग)** बच्चों से बहुत स्नेह करना
**व्याख्या:**
बच्चों से बहुत स्नेह करना

(ii) **(घ)** अपने जेल प्रवास के दौरान
**व्याख्या:**
अपने जेल प्रवास के दौरान

(iii) **(क)** पिताजी जिनको बुढ़ापा एक क्षण भी नहीं व्यापा
**व्याख्या:**
पिताजी जिनको बुढ़ापा एक क्षण भी नहीं व्यापा

(iv) **(ख)** क्योंकि वह निरक्षर है
**व्याख्या:**
क्योंकि वह निरक्षर है

(v) **(घ)** सावन की बरसात में
**व्याख्या:**
सावन की बरसात में

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (3 X 2 = 6 अंक)
   (i) प्रस्तुत पंक्तियों का अर्थ है कि बढ़ई काठ (लकड़ी) को काट सकता है, पर आग को नहीं काट सकता, इसी प्रकार ईश्वर घट-घट में व्याप्त है अर्थात् कबीर कहना चाहते हैं कि जिस प्रकार आग को सीमा में नहीं बाँधा जा सकता और न ही आरी से काटा जा सकता है, उसी प्रकार परमात्मा हम सभी के भीतर व्याप्त है। यहाँ कबीर का आध्यात्मिक पक्ष मुखर हो रहा है कि आत्मा (ईश्वर का रूप) अजर-अमर, सर्वव्यापक है। आत्मा को न मारा जा सकता है, न यह जन्म लेती है, इसे अग्नि जला नहीं सकती और पानी भिगो नहीं सकता। यह सर्वत्र व्याप्त है।
   (ii) गाँधी जी का प्रसंग साक्षरता के सिलसिले में आया है। गाँधी जी की इच्छा थी कि सभी लोग पढ़ना-लिखना सीखें। गाँवों में गाँधी जी का अच्छा प्रभाव है। कवि इसी प्रभाव के जरिए चंपा को पढ़ने के लिए तैयार करना चाहता था। इस कारण गाँधी जी का प्रसंग आया।
   (iii) संथाल बस्तियाँ आदिवासियों की बस्तियाँ हैं। ये लोग अपनी मिट्टी और प्रकृति से जुड़े हुए हैं। इनकी जिंदगी में आडंबर और दिखावे के लिए कहीं भी स्थान नहीं है। ये मन से भोले, अक्खड़ और जुझारू होते हैं। गाना और नाचना इनकी दिनचर्या का अभिन्न अंग है। परस्पर प्रेम और विश्वास इनकी जीवन-शैली है। सादगी भोलापन प्रकृति से जुड़ाव और कठोर परिश्रम आदि इनके स्वाभाविक गुण है
8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (2 X 2 = 4 अंक)
   (i) विवशतावश अन्याय को सहन कर समय गुजार देना आदि बुरा तो है, परंतु सबसे खतरनाक नहीं है। कवि ने अपने आक्रोश को दबाकर टालते रहने की प्रवृत्ति को बुरा बताया है इससे मनुष्य अपनी इच्छानुसार कार्य नहीं कर सकता।
   (ii) इस पद में मीरा ने कृष्ण के प्रति अपनी अनन्यता को व्यक्त किया है तथा व्यर्थ के कार्यों में व्यस्त लोगों के प्रति दु:ख प्रकट किया है। वे कहती हैं कि मोर मुकुटधारी गिरिधर कृष्ण ही उसके स्वामी हैं। कृष्ण-भक्ति में उसने अपने कुल की मर्यादा भी भुला दी है। संतों के पास बैठकर उसने लोकलाज खो दी है। आँसुओं से सींचकर उसने कृष्ण प्रेम रूपी बेल बोयी है। अब इसमें आनंद के फल लगने लगे हैं। उसने दही से घी निकालकर छाछ छोड़ दिया। संसार की लोलुपता देखकर मीरा रो पड़ती हैं। वे कृष्ण से अपने उद्धार के लिए प्रार्थना करती हैं।
   (iii) अक्कमहादेवी का मानना है कि व्यक्ति तभी भीख माँगता है जब उसका अहंभाव समाप्त हो जाता है। वह निर्विकार हो जाता है। ऐसी दशा में ही ईश्वर भक्ति की जा सकती है। व्यक्ति निस्पृह होकर लोककल्याण की सोचने लगता है।
9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

अलोपीदीन ने कलमदान से कलम निकाली और उसे वंशीधर के हाथों में देकर बोले-न मुझे विद्वता की चाह है, न अनुभव की, न मर्मज्ञता की, न कार्य कुशलता की। इन गुणों के महत्त्व का परिचय खूब पा चुका हूँ। अब सौभाग्य और सुअवसर ने मुझे वह मोती दे दिया है जिसके सामने योग्यता और विद्वता की चमक फीकी पड़ जाती है। यह कलम लीजिए, अधिक सोच विचार न कीजिए, दस्तखत कर दीजिए। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह आपको सदैव वही नदी के किनारे वाला बेमुरौवत, उद्दंड, कठोर परंतु धर्मनिष्ठ दारोगा बनाए रखे।

(i) **(ग)** स्टांप पत्र पर दस्तखत
**व्याख्या:**
स्टांप पत्र पर दस्तखत

(ii) **(क)** सभी
**व्याख्या:** सभी

(iii) **(ग)** धर्मनिष्ठ
**व्याख्या:** धर्मनिष्ठ

(iv) **(ख)** धर्मनिष्ठता से
**व्याख्या:** धर्मनिष्ठता से

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(v) **(ग)** गुणों के पारखी

**व्याख्या:**

गुणों के पारखी

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (3 X 2 = 6 अंक)

(i) पैसों की कमी के कारण ही बारिश का दृश्य चित्रित करने में बहुत मुश्किल आई थी। बरसात के दिन आए और गए, लेकिन पास पैसे नहीं थे, इस कारण शूटिंग बंद थी। अतः वर्षा ऋतु निकल गई। लेखक काफी समय तक उस दृश्य को फिल्माने के लिए गाँव में जाकर बरसात का इंतज़ार करता रहा। आखिरकार किस्मत से उसे शरद ऋतु में बरसात का दृश्य फ़िल्माने का अवसर मिला। शरद ऋतु में बरसात हो गई। अतः लेखक ने अपू तथा दुर्गा से ठंड में बरसात का दृश्य करवाया। दृश्य बहुत अच्छा हुआ।

(ii) नेहरू जी भारत के सभी किसानों से निम्नलिखित प्रश्न बार-बार करते थे-

i. वे 'भारत माता की जय' से क्या समझते हैं?

ii. यह भारत माता कौन है?

iii. वह धरती कौन-सी है जिसे वे भारत माता कहते हैं- गाँव की, जिले की, सूबे की या पूरे हिंदुस्तान की?

(iii) रजनी आम स्त्रियों से अलग है। आम स्त्री सहनशील होती है, वह घर की चारदीवारी में कैद रहकर पुरुषों के वर्चस्व को स्वीकार करती है। वह अन्याय का विरोध नहीं करती तथा संघर्षों से दूर रहना चाहती है। रजनी इन सबके विपरीत जुझारू, संघर्षशील व बहादुर है। वह अपने सामने हो रहे अन्याय को नहीं सहन कर सकती। वह अपने पति तक को खरी-खोटी सुनाती है तथा अधिकारियों की खिंचाई करती है। यह ट्यूशन के विरोध में जन-आंदोलन खड़ा कर देती है।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (2 X 2 = 4 अंक)

(i) लेखिका ने जब मियाँ नसीरुद्दीन से उनके खानदानी नानबाई होने का रहस्य पूछा तो उन्होंने बताया कि उनके बुजुर्ग बादशाह के लिए भी रोटियाँ बनाते थे। लेखिका ने उनसे बादशाह का नाम पूछा तो उनकी दिलचस्पी लेखिका की बातों में खत्म होने लगी। सच्चाई यह थी कि वे किसी बादशाह का नाम नहीं जानते थे या उन्होंने सुनी सुनाई बात कही थी। बादशाह का बावर्ची होने की बात उन्होंने अपने परिवार की बड़ाई करने के लिए कह दिया था। अतः बादशाह का प्रसंग आते ही वे बेरुखी दिखाने लगे।

(ii) लॉर्ड कर्जन स्वयं को निरंकुश, सर्वशक्ति संपन्न मान बैठा था। भारतीय जनता उसकी मनमानी सह रही थी। अचानक गुस्साए लार्ड का इस्तीफा मंजूर हो गया और उसे जाना पड़ा। यहाँ लेखक कहना चाहते हैं कि लॉर्ड कर्जन और भारतीय जनता के बीच एक तीसरी शक्ति अर्थात् ब्रिटिश सरकार है जिस पर न तो लॉर्ड कर्जन का नियंत्रण है और न ही भारत के निवासियों का ही नियंत्रण है। इंग्लैंड की महारानी का शासन न तो कर्जन की बात सुनता है और न ही कर्जन के खिलाफ भारतीय जनता की गुहार सुनता है। उस पर इस निरंकुश का अंकुश भी नहीं चलता।

(iii) **गलता लोहा** पाठ समाज की दशा हमारे सामने लाता है, किस प्रकार एक मेधावी छात्र की जिंदगी लोगों के उसके प्रति हीन भावना के कारण बरबाद हो जाती है , पढने के लिए शहर गया छात्र घरेलू नौकर बनके रह जाता है। जीवन में इतना कुछ सहने के बाद उसके अंदर की कला निखर कर आती है। जैसे लोहा तपने के बाद आकार लेता है, मोहन भी जीवन में कठिनाईयाँ सहकर निखर कर सामने आता है।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (5 X 2 = 10 अंक)

(i) पाठ के लेखक कुमार गंधर्व के अनुसार गाने की सारी मिठास, सारी ताकत उसकी रंजकता पर मुख्यतः अवलंबित रहती है। रंजकता का मर्म रसिक वर्ग के समक्ष कैसे प्रस्तुत किया जाए, किस रीति से उसकी बैठक बिठाई जाए और श्रोताओं से कैसे सुसंवाद साधा जाए इसमें समाविष्ट है। सरल शब्दों में कहें तो गाने के लिए सबसे आवश्यक तत्व है उसकी रंजकता अर्थात् श्रोताओं को जो गायगी आसानी से समझ में आ जाए और कानों को आनंद प्रदान करें, वह सबसे अधिक पसंद की जाती है वही सर्वश्रेष्ठ है। गाने की कसौटी उसकी लोकप्रियता है।

(ii) चेलवांजी अर्थात चेजारो वह व्यक्ति है जो रेगिस्तानी इलाकों में कुंई खोदने के कार्य में कुशल होता है। इन क्षेत्रों में कुंई खोदना एक विशेष प्रक्रिया है। इसमें छोटे से व्यास की तीस से साथ हाथ तक खुदाई और उसके साथ-साथ चिनाई करनी पड़ती है। खुदाई के समय ज़मीन की नमी और हवा के अभाव में दमघोंटू वातावरण रहता है। चिनाई के लिए ईंट-पत्थर या खींप की रस्सी गिराई जाती है। सिर को चोट से बचाने के लिए पीतल या तांबे का टोप पहना जाता है। यह प्रक्रिया काफ़ी कठिन है।

(iii) तातुश ने बेबी की पढ़ने-लिखने में रुचि देखी तो उसे प्रोत्साहित करने के लिए पेन व कॉपी दी तथा लिखने को कहा। उसने कहा कि होश सँभालने के बाद से अब तक की जितनी भी बातें तुम्हें याद आएँ, सब इस कॉपी में रोज थोड़ा-थोड़ा लिखना। पेन-कॉपी लेकर बेबी सोचने लगी कि इसका तो कोई ठिकाना नहीं कि जो लिखेंगी, वह कितना गलत या सही होगा। तातुश ने पूछा तो वह चौंक पड़ी। उसने कहा कि सोच रही थी कि लिख सकूँगी या नहीं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in